Date: 28/1/2022 ①

Lecture No:- 29   ①

Topic,   Time. 10:00 to 10:50 am

Dr. Sunita Kumari
Deptt. of Philosophy
B.A Part - I (H.)
Paper - I
Time and Date
10: A.M to 10: 50 A.M, 1/5/2020
A.N.D. Colleg Shahpur Patory, Samastipur.
(दर्शनशास्त्र विभाग)

① Vedanta: Shankara's

Ans :→ शंकर ने अपने दर्शन में जगत् को माया का खेल, पानी का बुलबुला और सर्प रज्जु विपर्यय जैसे उपमाओं से संकेत किया है।

जिस प्रकार अज्ञानवश हम रस्सी को हम साँप देख लेते हैं ऐसे भ्रम का कारण माया है। माया के दो कार्य है — आरोपण और विश्लेषण, जैसे माया रस्सी के असली रूप को ढक देती है यह आरोपन हुआ → फिर उसका दूसरा रूप विक्षेपण साँप के रूप में मिलता है। ठीक उसी प्रकार माया ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप

PTO.

पर आवरण डाल देती है। और उसकी विक्षेपण जगत के रूप में प्रस्तुत करती है। अतः जगत माया का खेल या भ्रम मात्र है। अज्ञान के कारण जिस प्रकार घटाकाश को हम वास्तविक समझते हैं उसी प्रकार जगत अज्ञानवश वास्तविक दिखाई पड़ता है।

प्रश्न उठता है कि माया क्या है? शंकर ने माया और भ्रम या अविद्या और अध्यास के बीच कोई अंतर नहीं किया है। माया ब्रह्म की शक्ति है।

परन्तु उसका वास्तविक स्वरूप नहीं। ब्रह्म माया से अलग रह सकता है,

परंतु माया ब्रह्म से अलग नहीं रह सकती है। तब प्रश्न उठता है कि जब माया ब्रह्म का स्वरूप नहीं है तो ब्रह्म कैसे जगत के रूप में उत्पन्न होता है? इस समस्या का समाधान

P.T.O.

शंकर ने एक उपमा के द्वारा करने का प्रयास किया है। जिस प्रकार कोई जादूगर अपनी जादू की मंत्र की प्रवीणता से एक सिक्के का अनेक सिक्का सिक्का (दिखाई) दिखलाता है। बीज से वृक्ष उत्पन्न करता है। किसी की प्रवीणता से एक सिक्के का अनेक सिक्का दिखलाता है।

बीज से वृक्ष उत्पन्न करता है। किसी भी व्यक्ति को काट देता है और दर्शक जो जादू से अनभिज्ञ है, मुग्ध हो जाता है। उसी प्रकार ब्रह्म माया के द्वारा विश्व की रचना करते हैं।

अज्ञानी इस जगत को सत्य मान बैठते हैं। जिस प्रकार जादूगर अपने जादू से प्रभावित नहीं होते हैं,

उसी प्रकार ब्रह्म पर माया का कोई प्रभाव नहीं पड़ता etc.

END